मानवीय संवेदना और साहित्य

पी. एम. आर. जयंती
हिन्दी प्राध्यापक,
एस.के.आर. एवं एस.के.आर. शासकीय महिला महाविद्यालय (ऑटोनॉमस), कडपा

सारांश-

यह लेख मानवीय संवेदना और साहित्य के बीच के अटूट संबंध को प्रस्तुत करता है। संवेदना मनुष्य की एक विशिष्ट मानसिक अवस्था है जो उसे दूसरों की पीड़ा और सुख को समझने एवं महसूस करने की क्षमता प्रदान करती है। लेख में विभिन्न हिंदी कोशों और शब्दार्थ संदर्भों के माध्यम से संवेदना की व्यापक परिभाषा प्रस्तुत की गई है।

साहित्य और समाज का संबंध अविभाज्य है। साहित्यकार एक अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति होता है जो अपने समय की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। लेखक इन परिस्थितियों को अपनी संवेदनशीलता और व्यक्तित्व के माध्यम से साहित्य में प्रकट करता है। संवेदना ही साहित्य को जीवंत और प्रभावशाली बनाती है, और यही कारण है कि महान साहित्य पाठकों के हृदय को झिंझोड़ने की शक्ति रखता है।

साहित्यकार महज़ एक संवाददाता नहीं होता जो तथ्यों का संकलन करे, बल्कि वह एक विश्लेषक होता है जो सामाजिक यथार्थ को समझकर उसकी गहराई तक जाता है। यह संवेदनशील दृष्टिकोण ही साहित्य को एक शक्तिशाली माध्यम बनाता है जो समाज को प्रभावित और परिवर्तित कर सकता है।

बीज शब्द (Keywords)- संवेदना, साहित्य, सहानुभूति,साहित्यकार,सामाजिक परिस्थितियाँ,मानवीय भावना,युग चेतना, अनुभूति।

प्रस्तावना –

मनुष्य एक सामाजिक एवं संवेदनशील प्राणी है। उसका संवेदना ही उसे अन्य प्राणी यों से अलग करती है, ऐसी बात नहीं है कि संवेदना केवल मानवों में ही पाई जाती है पर अन्यों की तुलना में मनुष्य सर्वाधिक बुद्धिमान एवं सहृदय पाया गया है। संवेदना रहित मनुष्य समाज से कटकर रह जाता है। संवेदना एक पवित्र भावना है। अन्य व्यक्ति चाहे वह परिचित हो या अपरिचित, की पीड़ा या दुःख देखकर संवेदनाशील मनुष्य के हृदय में सहानुभूति उपजती है यहीं सहानुभूति संवेदना का प्रारंभिक रूप होता है।

दुःखी मनुष्य जब किसी की सहानुभूति का पात्र बनता है तब उसका हृदय और आधिक भाव विह्वल एवं करुण हो उठता है, जिससे वह अपने दुःख के सर्वेद्य स्थिति को प्राप्त होता है एवं कुछ अविध के पश्चात उसके मन की टीस कम होती है और वह हल्का महसूस करता है। अतः कहा जा सकता है क्रूरातिक्रूर व्यक्ति के दिल में प्रवृत्ति का भी कम अधिक प्रमाण में संवेदना पाई जाती है। तब ही तो दुष्ट प्रवृत्ति का मानव भी पिघलता है। संवेदना मन की एक अवस्था है।

डॉ. मुकुन्द द्विवेदी के अनुसार "समाज और साहित्य का बड़ा ही घनिष्ठ संबंध होता है। साहित्य में ही जीवन प्रतिबिम्बित होता है। साहित्यकार संवेदनाशील मनुष्य होता है, वह समाज में रहता है। सामाजिक परिस्थितियाँ उसे प्रभावित करती

(Sympathy)(Sensitivity) (Sensation)(Feeling)

वेदना या अनुभूति अपने किसी आत्मीय अथवा समीपस्य व्यक्ति को होती है।

हिन्दी में संवेदना के स्थान पर फारसी के 'हमदर्दी' शब्द का प्रयोग होता है। साहित्यिक संदर्भ में 'संवेदनशीलता' मन की प्रतिक्रिया की शिक्त ही है, जिसके द्वारा संवेदनाशील व्यक्ति दूसरे किसी व्यक्ति के सुख-दुःख को समझकर उससे अपना तादात्म्य स्थापित करता है।

संवेदना का कोशगत अर्थ-

संवेदना मनुष्य के मिस्तिष्क की एक विशेष अवस्था है जिसके कारण वह स्वयं के साथ - साथ दूसरों की अनुभूतियों को महसूस करने की क्षमता रखता है। मानवीय संवेदना अनेक स्वरूपों में पाई जाती है। कभी करुणा से तो कभी सहानुभूति से या प्रेम एवं क्रोध द्वारा भी संवेदना प्रकट होती है। संवेदना को अनुभूति या सहानुभूति भी कहा जाता है। संवेदना द्वारा जीवन का व्यापक अनुभव दृष्टव्य होता है। संवेदना का अर्थ निम्नवत् दर्शाया गया है -

"संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभम्" में संवेदना के अर्थ को इस प्रकार विश्लेषित किया गया है। सम् + विद् + युच (प्रत्यय) वेदना शब्दमें सम् उपसर्ग लगाने से संवेदना शब्द की सरंचना हुई।

बृहत हिन्दी कोश में संवेदना का अर्थ इस प्रकार दिया गया है - "संवेदना (पुल्लिंग) संवेदना (स्त्रीलिंग) ज्ञान, अनुभूति जताना, सूचित करना, प्रकट करना इत्यादि।"

2. बृहत् हिन्दी कोश के अनुसार, "अनुभूति, सहानुभूति, दुःख या संवेदना प्रकट करने की क्रिया या भाव दुःख की अनुभूति। समस्त ज्ञान की प्राप्ति संवेदना से ही होती है। संवेदना में किसी पदार्थ या वस्तु का अनुभव करने की गहराई होती है।" 3. हिन्दी संस्कृत कोश के अनुसार "संवेदनम् अनुभवः सुख दुःखादि प्रतीति।" 4. मानक हिन्दी कोश के अनुसार "किसी के प्रति विशेष सहानुभूति को संवेदना कहते है। किसी भी प्राणी के प्रति हमारे मन में जो भी सहानुभूति के विचार या कृति होती है उसे ही संवेदना कहते है। 5. नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार "मन में होनेवाले शोध या अनुभव और किसी को प्रकट में देखकर होनेवाला दुःख सहानुभूति।" 6. संक्षिप्त हिन्दी शब्द कोश के अनुसार "संवेदना अर्थात् सम-वेदना का द्योतक है।" 7. "किसी के दुःखादि से दुःखी होना सहानुभूति कहलाता है" 8. दिनमान हिन्दी शब्द कोश के अनुसर "संवेदना का अर्थ अनुभव, अनुभूति है।" 9. शब्दार्थ विचार कोश के अनुसार "गुण, प्रवृत्ति, स्वभाव आदि की पारस्परिक समानता के अवसर पर हृदय में या मनुष्य के मन में वैसी ही वेदना अनुभूति होती है जैसी वेदना या अनुभूति अपने किसी आत्मीय व्यक्ति को होती है।"

शब्दार्थ विचार कोश के अनुसार "सनसनी (सेन्सेशन) मूलतः वह शरीरिक स्थिति है जिसमें आश्चर्य, भय आदि के कारण ऐसा जान पड़ता है कि संवेदन सूत्रों में रक्त का संचार कुछ तीव्रता पूर्वक होने लगा है। परंतु अपने परवर्ती एवं बहु प्रचलित अर्थ में इससे मानसिक स्थिति सूचित होती है। जो किसी आकस्मिक एवं बहुत ही विलक्षण घटना घटित होने पर उत्पन्न होती है और मानव मन की मनोवेगों को शुद्ध करती है।

शब्दार्थ विचार कोश में संवेदना एवं सहानुभूति को पर्याय के रूप में ही स्वीकृत किया गया है - "इस वर्ग के शब्दों का प्रयोग किसी आत्मीय या परिचित को विशेष कष्ट या विपत्ति में देखकर उसे धैर्य दिलाने या शांत

मनुष्य एक सामाजिक एवं संवेदनशील प्राणी है। उसका संवेदना ही उसे अन्य प्राणियों से अलग करती है, ऐसी बात नहीं है कि संवेदना केवल मानवों में ही पाई जाती है पर अन्यों की तुलना में मनुष्य सर्वाधिक बुद्धिमान एवं सहृदय पाया गया है। संवेदना रहित मनुष्य समाज से कटकर रह जाता है। संवेदना एक पवित्र भावना है। अन्य व्यक्ति चाहे वह परिचित हो या अपरिचित, की पीड़ा या दुःख देखकर संवेदनाशील मनुष्य के हृदय में सहानुभूति उपजती है यहीं सहानुभूति संवेदना का प्रारंभिक रूप होता है।

दुःखी मनुष्य जब किसी की सहानुभूति का पात्र बनता है तब उसका हृदय और आधिक भाव विह्वल एवं करुण हो उठता है, जिससे वह अपने दुःख के सर्वेद्य स्थिति को प्राप्त होता है एवं कुछ अविध के पश्चात उसके मन की टीस कम होती है और वह हल्का महसूस करता है। अतः कहा जा सकता है क्रूरातिक्रूर व्यक्ति के दिल में प्रवृत्ति का भी कम अधिक प्रमाण में संवेदना पाई जाती है। तब ही तो दुष्ट प्रवृत्ति का मानव भी पिघलता है। संवेदना मन की एक अवस्था है।

डॉ. मुकुंद द्विवेदी के अनुसार "समाज और साहित्य का बड़ा ही घनिष्ठ संबंध होता है। साहित्य में ही जीवन प्रतिबिम्बित होता है। साहित्यकार संवेदनाशील मनुष्य होता है, वह समाज में रहता है। सामाजिक परिस्थितियाँ उसे प्रभावित करती हैं।"

(सहानुभूति) • (संवेदनशीलता) • (संवेदना) • (भावना)

संवेदना का कोशगत अर्थ

संवेदना मनुष्य के मस्तिष्क की एक विशेष अवस्था है जिसके कारण वह स्वयं के साथ-साथ दूसरों की अनुभूतियों को महसूस करने की क्षमता रखता है। मानवीय संवेदना अनेक स्वरूपों में पाई जाती है। कभी करुणा से तो कभी सहानुभूति से या प्रेम एवं क्रोध द्वारा भी संवेदना प्रकट होती है। संवेदना को अनुभूति या सहानुभूति भी कहा जाता है।

हिंदी में संवेदना के स्थान पर फारसी के 'हमदर्दी' शब्द का प्रयोग होता है। साहित्यिक संदर्भ में 'संवेदनशीलता' मन की प्रतिक्रिया की शक्ति ही है, जिसके द्वारा संवेदनाशील व्यक्ति दूसरे किसी व्यक्ति के सुख-दुःख को समझकर उससे अपना तादात्म्य स्थापित करता है।

करने का प्रयास में होता है उसमें दुःख से दुःखी है और दुःख को कम करने की सहायक का भाव होता है।मानविकी पारिभाषिक कोश के अनुसार - "आजकल सामान्यतः संवेदना शब्द का प्रयोग सहानुभूति के अर्थ में होने लगा है। साहित्य में इसका प्रयोग 'स्वायाविक संवेदनाओं की अपेक्षा मनोगत संवेदना केलिए ही अधिक होता है... संवेदनाशील व्यक्ति दूसरे किसी भी व्यक्ति के सुख - दुःख को समझकर उस में अपना तादाल्य स्थापित कर लेता है।

निष्कर्ष- अतः कहा जा सकता है कि किसी के मन से उपजी विशेष सहानुभूति को संवेदना कहते है। संवेदना ज्ञानेंद्रियों की अनुभूति है। मनुष्य उत्तेजित होकर प्रतिक्रिया व्यक्त करता है वही संवेदना कहलाती है। संवेदना के विविध रूप पाए

जाते है। साहित्य और संवेदना का अटूट रिश्ता होता है। संवेदना के कारण ही साहित्य में जान आती है। मनुष्य की संवेदना को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विविधता बल प्रदान करते है। साहित्य में संवेदना अनेक रूपों में चित्रित होती है। वास्तव में लेखक की संवेदना ही साहित्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

साहित्यकार अति संवेदनाशील प्राणी होता है। सामाजिक परिस्थितियाँ उसे निरंतर प्रभावित करती रहती है। युग चेतना के स्वर उसके कृतियों में अनिवार्य रुप से दिखाई पड़ते है। वह युगीन यथार्थ को अपनी संवेदना एवं व्यक्तित्व के साँचे में ढालकर एक नया रूप देता है। साहित्यकार समाज में रहता है परंतु संवाददाता के भाँति मात्र तथ्यों का संकलन और प्रस्तुतीकरण नहीं करता। बल्कि तथ्यों को देखता, समझता, परखता और उनकी जड़ तक पहुँच विश्लेषण द्वारा सार प्रस्तुति करता है। उसे पाठकों तक पहुँचाता है। साहित्यकार अपनी रचना के माध्यम से पाठक संवेदनाओं को झिंझोडने का सामर्थ्य रखता है।

****

संदर्भ सूची (References)

कोश संदर्भ

1. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभम् - संवेदना शब्द की व्युत्पत्ति और परिभाषा
2. बृहत हिंदी कोश - संवेदना की व्यापक परिभाषा (ज्ञान, अनुभूति, सूचित करना)
3. हिंदी संस्कृत कोश - संवेदनम् की परिभाषा (अनुभवः सुख-दुःखादि प्रतीति)
4. मानक हिंदी कोश - सहानुभूति के संदर्भ में संवेदना की परिभाषा
5. नालंदा विशाल शब्द सागर - मन में होने वाले शोध की परिभाषा
6. संक्षिप्त हिंदी शब्द कोश - सम-वेदना का द्योतक
7. दिनमान हिंदी शब्द कोश - संवेदना का अर्थ (अनुभव और अनुभूति)
8. शब्दार्थ विचार कोश - संवेदना, सहानुभूति और सनसनी की विस्तृत परिभाषा
9. मानविकी पारिभाषिक कोश - साहित्य में संवेदना का प्रयोग और महत्व

विद्वान संदर्भ

डॉ. मुकुंद द्विवेदी - समाज और साहित्य के संबंध पर महत्वपूर्ण विचार

अतिरिक्त संदर्भ

- भारतीय साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद
- हिंदी साहित्य और समकालीन समाज
- लेखक की संवेदनशीलता और सृजनात्मकता
- साहित्य का सामाजिक प्रभाव और महत्व